om 3 delhi final_Page 1 and 2 25/04/2015 18:28 Page 3

कोमल दिल न बनो, कमल की तरह रहो...

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

प्यारे बापदादा ने हम बच्चों को इस वर्ष विशेष स्व के लिए अथवा सर्व के प्रति प्रेरणादायक बनने के लिए विधि दी है। तपस्या का मूल लक्ष्य है - व्यर्थ संकल्पों को, पुराने कड़े संस्कारों को समाप्त करना। इसके लिए व्यर्थ संकल्प उठने का कारण क्या है, इसे भी समझना है। व्यर्थ संकल्प उठने का कारण है कोई-न-कोई सूक्ष्म में भी इच्छा। जैसे बाबा कहते हैं - बच्चे, तुम्हें कोई भी देहधारी याद नहीं आना चाहिए। अगर याद आता है तो उसका कारण है - ज़रूर उसके पीछे कोई इच्छा या स्वार्थ है। कहाँ भी बुद्धी जाती हे तो सूक्ष्म चेक करो - जरूर उसके पीछे स्वार्थ होगा। कईयों की बुद्धि में आता हे मुझे मान मिले, मेरा शान हो, मेरी इज्जत हो...। मेरा नाम हो.. यह सूक्ष्म इच्छा भी व्यर्थ संकल्प उठने का कारण है। तो जिसमें ऐसी इच्छाएं उत्पन्न होती हैं उनके सामने तपस्या में यही विघ्नयही विघ्न रूप हैं। इसके लिए बेहद का वैराग्य चाहिए। जैसे कई समझते हैं मैं कोई भी सेवा करता हूँ तो उसकी कदर नहीं करता। कोई हमारी सेवा को स्वीकार नहीं करता, मानता नहीं। तो सेवा तो की लेकिन सूक्ष्म में कई प्रकार का मेवा चाहहते हैं। तो चाहना

माना ही इच्छा, आसक्ति है। कोई भी प्रकार की इच्छा होगी तो उसका सामना जरूर करना पड़ेगा। जैसे धन इकट्ठा करने का शौक होता है तो उसके लिए मेहनत करनी पड़ती, बिजनेस में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता। इसका अर्थ यह नहीं है कि शरीर निर्वाद अर्थ कर्म ही नहीं करना है। करना जरूर हे लेकिन एक है शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करना अथवा बाबा की सेवा के लिए कर्म करना और दूसरा है शौक अथवा इच्छाओं की पूर्ति के लिए कर्म करना। फिर करना और दूसरा है शौक अथवा इच्छाओं की पूर्ति के लिए कर्म करना। फिर ऐसे कर्म में स्वयं को बिजी कर लेते हो जो कन्ट्रोल से बाहर हो जाता, उसके लिए नींद भी नहीं करते। यदि उसमें अच्छा रेसपान्ड नहीं मिलता तो नाउम्मींद हो जाते। यह कोई बैलेन्स नहीं है। तपस्या कहती है - कर्म करो लेकिन बैलेन्स रखो। सेवा भले करो लेकिन आसक्ति नहीं रखो, स्वार्थ न हो। घूमो फिरो, खाओ पियो लेकिन अनासक्त रहो। अनासक्त स्थिति ऐसी होती है जो सब व्यर्थ संकल्पों से छुड़ा देती है। तो सूक्ष्म चेक करो कि व्यर्थ संकल्प यदि उत्पन्न होते हैं तो उसका कारण क्या है? क्या किसी भी प्रकार का शौक है या कोई आसक्ति है। हर बात का हुल्लास रखो, उमंग से करो लेकिन उसकी ऐसी फीलिंग आती जो चेहरा ही मुरझा जाता है। तो तपस्या करने के पहले ये चेक करो कि क्या हमने इस फिलिंग के फ्लु को समाप्त किया है? मेरी खुशी को कोई भी बात का मेरे माइण्ड पर उसका असर तो नहीं आता है? यदि माइण्ड पर असर आया, फिलिंग आई तो तपस्या भंग हुई। बाबा कहते बच्चे तुम्हारी स्थिति ऐसी चाहिए जैसे कमल का फूल। कमल फूल अर्थात् निर्लिप्त। सब कार्य करो लेकिन निर्लेप रहकर करो। निमित्त मात्र करो। न्यारे-प्यारे रहो। तो तपस्या का आधार ही है - न्यारे बनो और प्यारे बनो। इससे स्थिति अडोल रहेगी। न्यारे-प्यारे रहेंगे तो कोई इच्छा, आसक्ति पैदा नहीं होगी। जब कोई भी आसक्ति नहीं, मान- शेष पेज 8 पर...

वृहद महिला संस्था...

-पेज 1 का शेष

घर कर जाये इस आधार से उन्होंने पाश्चात्य देशों में मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया। सन् 1970 में दादी जी पहली बार इंग्लैण्ड गईं और अपने आध्यात्मिक शक्ति और प्रखर प्रज्ञा के आधार से पाश्चात्य संस्कृति में मूल्यों को सिंचित किया। आज उनकी प्रज्ञा के आधार से ही लगभग सेवाओं का विस्तार 140 देशों तक पहुंचा है।

ऐसी दादी को यदि हम विश्व की तीव्रतम व सभी के बुद्धि को भेदने वाला ब्रह्मास्त्र कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज उनका एक-एक शब्द एक अस्त्र की तरह ही लगता है जो सारी बुराइयों को एक सेकण्ड में नष्ट कर सकता है।

जो हमने देखा.... जो पाया...

एक बार की बात है, दादी जी आबू रोड से 6 किलो.मी. दूर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर में स्थित एक विशाल सभागार डायमण्ड हॉल में एक भव्य कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं, संयोग वश उसमें तत्कालिन उपराष्ट्रपति माननीय श्री भैरो सिंह सेखावत जी भी उपस्थित थे। जब अपने मुख्य अतिथिय भाषण में माननीय श्री उपराष्ट्रपति जी बोल रहे थे, तो उनके मुख से दो बार एक ही शब्द निकला कि ''ब्रह्माकुमारियां आत्मा सो परमात्मा का ज्ञान सबको दे रही हैं, इससे सभी की जिज्ञासाएं भी शांत हो रही हैं कि आत्मा ही परमात्मा है'' तो दादी ने उस समय कहा था कि पिछले 6 दशकों से हम इसी बात पर प्रयास कर रहें है, स्पष्ट कर रहें है कि आत्मा अलग है परमात्मा अलग है, आत्मा परमात्मा नहीं है। यहां हम यह स्पष्ट करना चाह रहे हैं कि दादी जी का भगवत् प्रेम मानव प्रेम से बहुत उपर है, उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि उनको यह बुरा लगेगा, लेकिन भगवान की श्रीमत को सबसे ऊपर रखा और बीच में रोक कर यह बात कही। और यह बात हमारे माननीय उपराष्ट्रपति जी को बहुत अच्छी लगी, उन्होंने यह कहा भी कि आपकी परमात्म आस्था देखकर मैं धन्य हो गया।

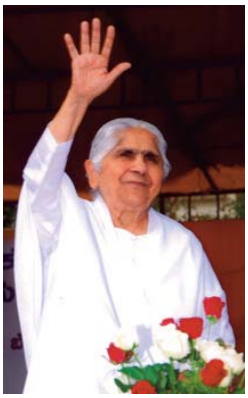

दादी जी निर्भीक हैं इस बात को आप उपरोक्त उदाहरण द्वारा देख भी सकते हैं और समझ भी सकते हैं। उन्हें यह पूर्णत: विश्वास है कि यह संस्था ईश्वरीय आधार से है मानवीय आधार से नहीं है। कोई भी परमात्मा के कार्य को लेकर असमंजस में ना रहे इसका जीता जागता और ज्वलंत उदाहरण दादी जानकी जी हैं। हमने सबसे ज़्यादा दादी से एक ही चीज़ सीखी है कि जो परमात्म बल से चलता है उसे दुनिया सलाम करती है क्योंकि लोग उस बल से हमेशा नीचे ही है और प्राय: उसे एक अंजान शक्ति के रूप में देखते हैं लेकिन वह शक्ति प्रकट होती है हमारी धारणाओं से। इसीलिए तो दादी जी के सामने जाते ही एक बल एक भरोसे का पूर्णत: एहसास हो जाता है।

विभिन्न भाषाओं के बीच बोया आध्यात्मिकता का बीज

राजयोगिनी दादी जानकी की मेधा शक्ति की प्रबलता का आंकलन, हम उनके सभी के मनोभावों को पढ़ने के तरीके से लगा सकते हैं। आध्यात्मिकता के बल से आपने विदेशी संस्कृति के लोगों पर अलग छाप छोड़ी। दादी जी संस्थान की ओर से 1970 में पहली बार विदेश सेवा हेतु लन्दन गईं और वहां पर सबके मनोभावों को पढ़ लोगों के अन्दर मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया। विदेशी संस्कृति के लोग भी इन मानवीय मूल्यों को अपनाने में खुशी महसूस करते थे। इसका उदाहरण व परिणाम यह है कि लगभग 140 देशों में आध्यात्मिक मानवीय मूल्यों का संचार हो चुका है। मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में दादी जानकी जी ने उस ओर कदम बढ़ाया जहां बीजारोपण करना बहुत कठिन कार्य था। लेकिन दादी जी के सतत् प्रयासों से आज संस्था का विस्तार विदेश तक जा पहुंचा है।

आनंद का दूसरा नाम दादी जानकी

कहा जाता है कि सूक्ष्म शरीर में सात चक्र विद्यमान हैं, इन्हीं चक्रों के द्वारा सूक्ष्म शरीर को ऊर्जा मिलती है और शरीर स्वस्थ रहता है। कहते हैं चक्रों में सर्वश्रेष्ठ चक्र सहस्रार है जिसके खुलने के बाद व्यक्ति आनंदित रहता है, उसे और कुछ भी नहीं भाता परमात्मा के सिवाए। वो हमेशा उसी आनन्द में खोया रहता है। हमारी दादी जानकी जी का वही आनंदमयी चक्र पूर्णतया खुल चुका है, उनके मुख से एक ही बात निकलती है ''कितना मीठा कितना प्यारा, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा'' बस और कुछ नहीं। हमेशा आनंद रस से सराबोर हमारी राजयोगिनी दादी जानकी जी सभी को उसी रस से सराबोर करने की कोशिश करती हैं। उनकी बुद्धि इतनी स्थिर हो चुकी है कि और कहीं वाह्य आकर्षणों में बुद्धि जाती नहीं, स्थिर चित्त दादी जी को विश्व की प्रथम स्थिर चित्त महिला के ख़िताब से भी नवाज़ा जा चुका है। मनोवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने भी दादी की शक्ति के आगे अपने आपको नतमस्तक किया।

पानीपत। शिक्षा मंत्री राम विलास शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण व ब्र.कु. सुमन।

भुत्तो मंडी-बठिंडा (पंजाब)। विश्वशांति मेले का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए जतिन्द्र कुमार जैन,आई.जी.,इन्टेलिजेंस। साथ हैं ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. अरुण व ब्र.कु. रत्न।

मुरादाबाद। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त, एम.एल.सी.,बी.जे.पी. को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. आशा।

सैफयी-उ.प्र.। किसान सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मौजूद हैं आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. टी. प्रभाकरन, चिकित्सा अधीक्षक डॉ.रमाकान्त यादव, कॉर्पोरेटिव बैंक के चेयरमैन डॉ. राम कुमार, ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. निधि व अन्य।

वोकारो-झारखण्ड। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में जैन धर्म के प्रतिनिधी पी.के. ओसवाल, फादर जे.कैप, बौद्ध धर्म के प्रतिनिधि, सुतान्सु प्रसाद,ई.डी.बोकारो स्टील प्लान्ट तथा ब्र.कु. कुसुम।

दिल्ली-गाज़ीपुर। विधायक ओम प्रकाश शर्मा को गुलदस्ता भेंट कर मुबारकबाद देते हुए ब्र.कु. सुधा।